स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट 4 साल बाद भी अधूरे

आप्टिकल फाइबर के अभाव में कैमरे ऑफलाइन, चार महीने से टेंडर के लिए अटका पड़ा है एक्सटेंशन

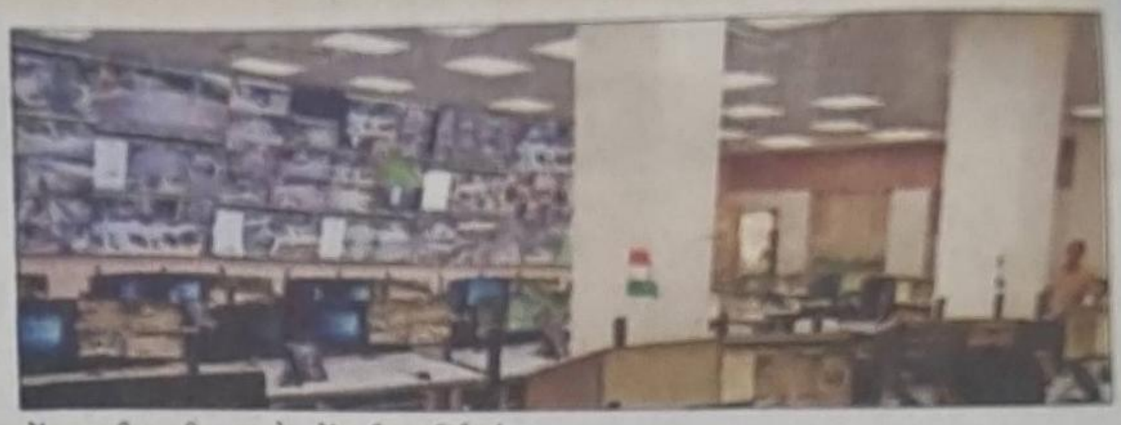

अजमेर : ऐसे होनी चाहिए कैमरों की मॉनिटरिंग व दूसरी ओर अभय कमांड सेंटर में खाली पड़ी आपरेटरों की कुर्सियां।

अजमेर, 28 जून (शिवेश दत्त): एडवांस पुलिसिंग और क्राईम कंट्रोल के लिए राज्य सरकार की महात्वाकांक्षी योजना अभय कमांड एंड कंट्रोल सेंटर चार साल में भी पूरा नहीं हो पाया है। इस सेंटर को तीसरी आंख का नाम दिया गया, लेकिन तीसरी आंख से आधा शहर ओझल है। कई इलाके तो ऐसे है, जहां तक कमांड सेंटर की नजर पहुंची ही नहीं है। ऐसे में क्राईम डिटेक्शन केलिए पुलिस पर्सनल कैमरों पर डिपेंड है।

सबसे महत्वपूर्ण क्राउंड मैनेजमेंट और ट्रेफिक मैनेजमेंट में कैमरे वर्क नहीं कर रहे हैं। तीन विभागों से संचालित इस प्रोजेक्ट का कोई जेनरिक फादर ही नहीं है। गौरतलब है कि राजस्थान सरकार ने मार्च 2017 में एडवांस पुलिसिंग के लिए अभय कमांड ऐंड कंट्रोल रूम की स्थापना की थी। इसका उद्देश्य शहर व आसपास के इलाके की पलपल की लाईव मॉनिटरिंग, हाई क्वालिटी वीडियों, वीडियों सर्विलांस, कॉल रिकार्डिंग, व्हिकिल ट्रेकिंग, क्राईम मैनेजमेंट, क्राईम डिटेक शन, ट्रेफिक मैनेजमेंट और कंट्रोल क्रिमिनल एक्टिविटी शामिल है। बताया जा रहा है कि स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के इस सब प्रोजेक्ट को मार्च 2017 में लॉच किया गया था। इसकी अवधि पांच साल की थी। इस तरह से मार्च 2023 में योजना पूरी हो जानी चाहिए। लेकिन जितना कार्य बाकी है उसे देखते हुए विशेषज्ञो का मानना है कि पूरा करना मुश्किल है।

कहां-कहां नहीं लगे कैमरे

शहर का अलवरगेट थाना क्षेत्र, आदर्श नगर थाना क्षेत्र और रामगंज थाना क्षेत्र में कैमरे लगे ही नहीं है। इन तीन थानों की पुलिस को क्राईम से जुड़ी किसी भी तरह की जांच करने के लिए प्राईवट यानी लोगों के लगाए गए सीसीटीवी कैमरे पर निर्भर रहना पड़ता है। इसके अलावा क्लॉक टावर थाना, सिविल लाईन थाना, किशनगंज थाना क्षेत्र गंज थाना क्षेत्र में आधे-अधूरे तौर पर कैमरे लगे हैं। इसी तरह गुलाबवाड़ी से भैरोमंदिर तक करीब छह किलोमीटर का एरिया, जयपुर रोड पर आईजी आफिस से आगे चार किलोमीटर का तीसरी आंख से दूर है। इन कुल 473 कैमरों में से महज 15 कैमरे ही रोटेट होते है। इनमें से आधे 360 डिग्री पर और आधे 180 डिग्री पर रोटेट होते है। बाकी के सभी कैमरे फिक्स हैं, जो एक साईड से ही रिकार्ड करेगी, उनके दाएं, बाएं क्राईम हो जाए तो तीसरी आंख को दिखाई नहीं देगा और क्रिमिनल क्राईम करके निकल जाएगा। इस योजना का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य था ट्रेफिक मैनेजमेंट लेकिन यह मकसद भी पूरा नहीं हो पा रहा है। कमांड सेंटर में बैठा व्यक्तिमॉनिटर करते हुए यह तो देख सकता है कि कौन वाहन चालक ट्रेफिक नियम तोड़ रहा है लेकिन वह वाहन के नंबर नहीं पढ़ सकता। वजह यह है कि अजमेर शहर में लगाने के लिए आटोमेटिक नंबर प्लेट रीडर (एएनपीआर) कैमरे की मंजूरी नहीं मिली थी। जबकि जयपुर में एएनपीआर कैमरे लगे हैं।

इस कैमरे के न होने से ट्रेफिक पुलिस को उस वाहन का चालन करने में परेशानी हो रही है। बिना वाहन के नंबर के चालान कैसे किया जाए।

एलिवेटेड रोड आ रहा आड़े

शहर में कचहरी रोड, गांधी भवन, रेलवे स्टेशन रोड और नगर निगम रोड पर एडिवेटेड रोड का कार्य पिछले चार सालों से चल रहा है। अभी भी यह कार्य प्रगति पर है। जिसकी वजह से आप्टिकल फाईवर के लगे प्वाइंट पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गए है। इन इलाकों में लगे कैमरे बेकार पड़े हुए है। यह इलाका रेलवे स्टेशन, ब्यावर रोड, कचहरी और दरगार का प्रवेश द्वार होने की वजह से बेहद महत्वपूर्ण है। आप्टिकल फाईवर की लाईन न होने के कारण स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के मैनेजरों ने 121 कैमरे एसडी कार्ड से संचालित लगा दिए है। एसडी कार्ड में महज तीन दिन की रिकर्डिंग ही होती है। आटोमेटिक तरीके से अगली रिकार्डिंग के साथ ही पिछली रिकाडिंग डिलिट हो जाती है। इन कैमरों की जद में अगर क्राईम हो जाए तो उसे लाईव नहीं देखा जा सकता दूसरा तीन दिन पहले की रिकाडिंग देखनी असंभवन है। तीन दिन के बीच की रिकाडिंग चेक करने के लिए उसमें लगा एसडी कार्ड निकाल कर अभय कमांड में लाकर ही देखा जा सकता है।

Punjab Kesari Pg 8, 29/6/22